Websites:
http://www.sciencepub.net/academia
http://www.sciencepub.net

Emails:
aarena@gmail.com
editor@sciencepub.net

Academia Arena

MARSLAND PRESS
Multidisciplinary Academic Journal Publisher

Specific role of Professor Amartya Sen's economic thought in the current economic crisis in India
भारत में वर्तमान आर्थिक संकट में प्रोफेसर अमर्त्य सेन के आर्थिक विचारों की विशिष्ट भूमिका

Dr. Shaiphali Jain

Assistant Professor (Economics) in Shri Prem Prakash Memorial College of Education (Teerthanker Mahaveer University), Moradabad, Uttar Pradesh, India.
Email: shaiphali1980jain@gmail.com

Abstract: The global recession that started in 2008 is still hitting western countries. Their economic growth rate has cooled down. The reasons and its remedies are being discussed at Oxford University Business School. In the debate about the nature of the economy, Amartya Sen said that western economies should learn from India and China. According to Dr. Sen, India and China are opening markets safely. New Delhi and Beijing have new ideas and they are also being implemented in a phased manner. According to the Nobel Prize winning economist, western countries need to do the same. According to Dr. Sen, India and China were also hit by economic recession. The economic growth rate of both countries was somewhat slow for two years, but after that both these countries got out of the rapid recession and now are also supporting the economies of other countries. According to experts, there are very few ways to avoid the risk of recession in the economies of western countries. All the money has been dumped in the market and there are many areas which have the power to sink the market. Martin Wolff of the financial newspaper, the Financial Times, and Robert Vaid, a professor at the London School of Economics, also believe the same.

[Jain, S. **Specific role of Professor Amartya Sen's economic thought in the current economic crisis in India.** *Academ Arena* 2020;12(11):53-58]. ISSN 1553-992X (print); ISSN 2158-771X (online). http://www.sciencepub.net/academia. 7. doi:10.7537/marsaaj121120.07.

Abstract: सारांश: 2008 से शुरू हुई विश्वव्यापी मंदी की मार अब भी पश्चिमी देशों पर पड़ रही है. उनकी आर्थिक विकास दर ठंडी पड़ी है. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी के बिजनेस स्कूल में इसके कारणों और इससे निकलने के उपायों पर चर्चा हो रही है | अर्थव्यवस्था के स्वरूप को लेकर छिड़ी बहस में अमर्त्य सेन ने कहा कि पश्चिमी अर्थव्यवस्थाओं को भारत और चीन से सीख लेनी चाहिए | डॉक्टर सेन के मुताबिक भारत और चीन बाजारों को सुरक्षित ढंग से खोल रहे हैं. नई दिल्ली और बीजिंग के पास नए विचार हैं और उन्हें चरणबद्ध तरीके से अमल में भी लाया जा रहा है. नोबेल पुरस्कार विजेता अर्थशास्त्री के मुताबिक पश्चिमी देशों को भी ऐसा ही करने की जरूरत है | डॉक्टर सेन के मुताबिक भारत और चीन पर भी आर्थिक मंदी की मार पड़ी. दोनों देशों की आर्थिक विकास दर दो साल तक कुछ धीमी रही लेकिन उसके बाद यह दोनों देश तेजी से मंदी से बाहर निकले और अब अन्य देशों की अर्थव्यवस्थाओं को भी सहारा दे रहे हैं | जानकारों के मुताबिक पश्चिमी देशों की अर्थव्यवस्थाओं में मंदी के जोखिम से बचने के उपाय बहुत कम हैं. सारा पैसा बाजार में झोंका जा चुका है और ऐसे कई क्षेत्र हैं जो बाजार को डुबोने की ताकत रखते हैं. आर्थिक जगत के दिग्गज अखबार फाइनेंशियल टाइम्स के मार्टिन वोल्फ और लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स के प्रोफेसर रॉबर्ट वैड भी यही मानते हैं.

Keywords: (कुंजी शब्द) अमर्त्य सेन, आर्थिक, सामाजिक विचार

Introduction (प्रस्तावना):

अर्थव्यवस्था का भारतीय स्वरूप क्या है या क्या हो सकता है? अर्थनीति की तेज़ी से बदलती भारत की वर्तमान परिस्थितियों में भारत को क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए? उदारीकरण और विश्वीकरण के आज के माहौल में विदेशी योजनाओं का अनुकरण करने के स्थान पर क्या हम इनसे भी अच्छी कुछ योजनाएं प्रस्तुत कर सकते है? ऐसे सभी प्रश्नों के उत्तर प्रसिद्ध अर्थनीति-विचारक भरत झुनझुनवाला ने इस पुस्तक में दिए हैं।

बोधपूर्ण टिप्पणियों तथा आँकड़ों से भरपूर एक कठिन विषय की यह एक रोचक पुस्तक है।

प्रो. अमर्त्य सेन को नोबेल पुरस्कार प्राप्त होने के पश्चात उनकी आर्थिक स्थापनाओं पर जो व्यापक चर्चा आरम्भ हुई, यह पुस्तक उनकी भी भारतीय दृष्टि से समीक्षा प्रस्तुत करती है। साथ ही आर्थिक नीति संबंधी महात्मा गांधी के विचारों पर भी लेखक ने अपना मत व्यक्त किया है।भरत झुनझुनवाला ने विज्ञान में स्नातक बनने के बाद यूनिवर्सिटी ऑफ फ्लोरिडा से कृषि अर्थशास्त्र में डॉक्टरेट की तथा बंगलौर के इंडियन इन्स्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट में अध्यापन कार्य किया। भारत के विकास तथा अर्थशास्त्र में रुचि रखने वाले सभी पाठकों तथा इन विषयों के छात्रों-अध्यापकों के लिए यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है।

साधारण श्रेणी के मनुष्य को केवल रोटी, कपड़ा और मकान की चिन्ता रहती है। मध्यम श्रेणी के मनुष्य को अतिरिक्त सुख-साधनों को जुटाने की चिन्ता रहती है। उत्तम श्रेणी के मनुष्य को अपनी धनी स्थिति को बनाए रखने एवं और आगे बढ़ने की चिन्ता रहती है। सरकार, नियम, कानून, ग्रन्थ व शास्त्र मुख्य रूप से मध्यम श्रेणीवालों के लिए होते हैं और गौण रूप से उत्तम श्रेणीवालों के लिए है। साधारण श्रेणीवालों को सरकारादि किसी भी चीज से कोई मतलब नहीं रहता। इसलिए इस संसार में साधारण श्रेणी का शोषण मध्यम श्रेणी का शोषण उत्तम श्रेणी वाले करते आए हैं, करते हैं और करते रहेंगे। इसी शोषण के कारण हर व्यक्ति अपने को वंचित महसूस करता है। विकास के लिए आवश्यक है कि हर व्यक्ति इस 'वंचना की भावना' को त्यागे और अपने से उत्तम श्रेणी वालों की बराबरी करने का प्रयास करे।

इस पुस्तक के लेखक ने अवचेतन इच्छाओं की पूर्ति की बात की है। वास्तव में अवचेतन इच्छाओं को देखना आसान नहीं है। फिर भी यह कहा जा सकता है कि दरिद्रों की अवचेतन इच्छाओं को सामाजिक सम्मोहन से मिटाया नहीं जा सकता, केवल कुछ समय के लिए दबाया जा सकता है। ये इच्छाएँ इतनी प्रबल होती हैं कि बार-बार प्रकट होंगी। अत: नई-नई इच्छाओं को पैदा करने की अपेक्षा अवचेतन में निहित इच्छाओं को पहचानने की विधि को अपनाकर उसी इच्छा पूर्ति में लग जाना चाहिए।

वस्तुत: इस संसार के समस्त व्यवहार में सवाल व्यवस्था का है। अत: यह विचार करना है कि किस व्यवहार व्यवस्था को कौन सम्भाले और कौन उसका नियन्त्रण करे। प्रत्येक व्यवस्था के कर्ता एवं नियंता का सही तामेल हो जाए तो मनुष्य सुखी हो सकता है। इतिहास में सरकार अथवा राजा जब-जब स्वयं व्यवस्था की कर्ता हुई है तब-तब समाज में अव्यवस्था हुई है। अत: सरकार को सदा नियंत्रक ही बने रहना चाहिए, किसी भी प्रकार (जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य बिजली, पानी, सड़क, शोधकार्य आदि) का व्यापार नहीं करना चाहिए। अपितु उन पर नियंत्रण बनाए रखना चाहिए। सार्वजनिक सुविधाओं की उपलब्धि सरकार निजी क्षेत्र द्वारा अपने नियंत्रण में करा सकती है।

लेखकों ने बेरोज़गारी समस्या का जो हल बताया है वह अत्युत्तम है। कार्य ही उपलब्धता से स्वाभिमान से युक्त सुख की प्राप्ति अवश्य होगी। इस व्यवस्था से समाज में जो असमानता अनिवार्य रूप से है उसको स्वीकार करते हुए भी सामाजिक न्याय संभव है। इस व्यवस्था में प्रत्येक व्यक्ति को जो भिन्न-भिन्न क्षमताएँ मिली हैं (जैसे पर्यावरण, सम्पत्ति, लिंग, मानसिक व शारीरिक क्षमता) उसी का विकास करने के प्रति प्रोत्साहित करना चाहिए।

देश का पिछड़ापन, सामाजिक अन्याय, वितरण में विफलता आदि का कारण है स्वार्थप्रधान उपभोगवाद। अनादि काल से समाज में असमानता रही है, फिर भी सभी सुखी थे। कारण यह था कि सभी एक-दूसरे का ख्याल रखते थे। असमानता को छुआछूत, साम्प्रदायिकता आदि की संज्ञा देकर अनर्थ हुआ है। जब तक इन कुरीतियों को मिटाया न जाएगा तब तक सामाजिक सुख, शान्ति एवं समृद्धि असंभव है।

भारत के इतिहास के उज्जवल समय पर दृष्टि डालकर विचार करते हैं तो लगता है कि किसी भी प्रकार के विदेशी निवेश (संस्थागत व प्रत्यक्ष) को कभी अवसर नहीं दिया गया था। कच्चे माल (संसाधनों) का निर्यात भी देश के हित में नहीं है। अत: वर्तमान में देश की आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिए कच्चे माल का निर्यात एवं विदेशी निवेश पर पूर्ण रूप से प्रतिबन्ध लगाकर केवल सीमित मात्रा में उत्पादित माल के विदेशी व्यापार को बढ़ावा देना चाहिए। लेकिन साथ-साथ हर क्षेत्र में आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ने

के लिए घरेलू उद्योग को भी प्रोत्साहन देना होगा ताकि अन्तराष्ट्रीय बाजार के उलट-फेर से उत्पन्न कुप्रभाव से देश पीड़ित न हो।

श्रमिकों के आवागमन के साथ-साथ मुद्रा की परिवर्तनीयता अच्छी है। सभी मुद्राओं को उचित स्थान प्राप्त होना चाहिए। यदि हम केवल डालर पर निर्भर रहेंगे तो निश्चित है कि अमेरिका को आर्थिक स्थिति लुढ़कते ही विश्व में आर्थिक संकट उत्पन्न हो जाएगा। एक राष्ट्र की तानाशाही भी कब तक बनी रहेगी? विश्व की सुव्यवस्था के बने अनेक संगठन- संयुक्त राष्ट्र संघ, ग्रीनपीस, यूनिसेफ, नेटो, अंकटाड, विश्व बैंक, विश्व व्यापार संघठन, डब्लू.एच.ओ. इत्यादि- भी विकसित देशों के जेबी संघटन बन कर रह गए है। इस समस्या से निपटने का एक ही उपाय है कि विकासशील देश भिन्न-भिन्न माल उत्पादकों संघों- जैसे ओपेक-का गठन करें ताकि वे विकसित देशों पर अपना दबाव डाल सकें।

आर्थिक विकास से वंचित तबकों को हुआ बहुत कम फायदा: अमर्त्य सेन:

नोबेल पुरस्कार से सम्मानित अर्थशास्त्री अमर्त्य सेन ने देश में किफायती स्वास्थ्य सुविधाएं मुहैया कराने में नाकामयाबी के पीछे राजनीतिक इच्छाशक्ति की कमी को जिम्मेवार बताया। टाटा मेमोरियल प्लैटिनम जूबिली सेलिब्रेशंज में 'सभी के लिए स्वास्थ्य सुविधा- क्यों और कैसे' विषय पर बोलते हुए सेन ने स्वास्थ्य सेवाओं के बढ़ते निजीकरण की आलोचना की और कहा कि गरीबों का दोहन तुरंत रुकना चाहिए। अमर्त्य सेन ने कहा कि आर्थिक विकास की रफ्तार के अनुकूल समाज का वंचित वर्ग आगे नहीं बढ़ पाया है। सेन ने कहा कि नोटबंदी एक दिशाहीन मिसाइल थी जिसे सरकार ने लोकतांत्रिक परंपराओं के निर्वहन के बगैर फायर किया था। उन्होंने कहा, 'कई तरह की मुश्किलों और परेशानियों की खबरें आईं... यह पता ही नहीं चल पाया कि मिसाइल कहां जाकर गिरी।' स्वास्थ्य सुविधाओं की बात करते हुए सेन ने कहा, 'भारत आश्चर्यजनक रूप से बहुत छोटा हिस्सा जीडीपी का 1.3% ही स्वास्थ्य सुविधाओं पर खर्च करहता है जबकि चीन 3 प्रतिशत।'

नोटबंदी निरंकुश फैसला: अर्थशास्त्री अमर्त्य सेन

उन्होंने कहा कि आर्थिक विकास से पैदा हुई संपत्ति का बड़े पैमाने पर असमान बंटवारा हुआ। सेन ने कहा कि स्वास्थ्य सुविधा की परिभाषा में पोषण, स्वच्छता और सामाजिक समानता जैसे सामाजिक निर्धारकों को भी शामिल किया जाना चाहिए। हार्वर्ड यूनिवर्सिटी में अर्थशास्त्र और दर्शन के प्रफेसर सेन ने कहा कि भारत में स्वास्थ्य सेवाओं के निजी कंपनियों की भागीदारी बहुत ज्यादा है और यह औसत विकसित देशों के मुकाबले भी आगे है। फिर भी गुणवत्ता की समस्या है।

सेन ने कहा कि नेपाल और बांग्लादेश जैसे बहुत कम प्रति व्यक्ति आय वाले देशों ने कुछ सामाजिक पैमानों पर भारत को पछाड़ दिया है। उन्होंने कहा, 'कुछ निश्चित स्वास्थ्य मापदंडों पर भारत सिर्फ पाकिस्तान से आगे है।' सेन के मुताबिक, स्वास्थ्य के मामले में भारत के पिछड़ेपन का एक कारण वंचित तबकों को आर्थिक विकास का उचित लाभ नहीं मिल पाना भी है। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय सुरक्षा बीमा योजना जैसी योजनाओं के जरिए निजी अस्पतालों को सब्सिडी देने का अनैतिक कार्य भी रुकना चाहिए।

प्रफेसर अर्मत्य सेन ने कहा कि आश्चर्यजनक तौर पर साल 2014 के लोकसभा चुनाव के दौरान किसी भी बड़े राजनीतिक दल के मैनिफेस्टोज में स्वास्थ्य सुविधाओं पर कुछ नहीं कहा गया। उन्होंने मीडिया पर इस विषय पर विचार-विमर्श नहीं करने का आरोप लगाया और कहा कि साल 2012 में उनकी ही टीम की ओर से किए गए विश्लेषण में सामने आया कि 1% से भी कम संपादकीय लेखों में स्वास्थ्य से जुड़ी खबरों का जिक्र था।

प्रोफेसर अमर्त्य सेन के आर्थिक विचार:

Amartya Sen का प्रमुख विषय अर्थशास्त्र था और इसके प्रति उनकी विशेष रूचि थी। अमर्त्य कुमार एक ऐसी अर्थव्यवस्था चाहते थे जिसके आर्थिक लाभ का कुछ हिस्सा गरीबों को भी मिले। अमर्त्य कुमार का झुकाव वामपंथी राजनीति की ओर हो गया।

सन 1943 में बंगाल में जो अकाल पड़ा था, उस अकाल में 25 लाख से भी अधिक लोग मौत के मुंह में समा गए थे। उस कल के पड़ने की एक वजह यह भी थी कि अंग्रेजी सरकार की वितरण प्रणाली कमजोर थी। उस समय विश्व

के बहुत से अर्थशास्त्री तरह-तरह की आर्थिक नीतियों को खोज रहे थे।

उनका उद्देश्य विकसित देशों को लाभ पहुंचाना था। उनके अलावा और भी ऐसे बहुत से अर्थशास्त्री थे, जो विकासशील देशों के व्यापारियों की अर्थव्यवस्था को उछालने में लगे थे। अमर्त्य कुमार ने ऐसे ठोस उपाय खोज निकाले, जिनके व्दारा मनुष्य की दरिद्रता और गरीबी से उसे छुटकारा दिलाया जा सकता था।

उन्होंने आगे चलकर विश्व अर्थव्यवस्था की सभी अच्छाइयों और बुराइयों को देखा। इस आधार पर उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला था। विश्व में अरबों ऐसे लोग हैं, जिनका जीवन दुख-दरिद्रता से घिरा है। भारत में ऐसे लोगों की संख्या अधिक है। इतिहास इस बात का गवाह है कि बाहर से आए विदेशी शासकों और स्वदेशी शासकों ने भी आम आदमी की कमर तोड़कर रख दी है।

आर्थिक मजबूरी उनके कंधों पर बोझ की तरह लदी हुई है। इस बोझ को ढोते-ढोते न जाने कितनी पीढियां बीत चुकी हैं और आगे न जाने कितनी पीढियां इसके नीचे दबने को विवश थीं। Amartya Sen ने सन 1953 में प्रेसिडेंसी कॉलेज से अर्थशास्त्र में स्नातक की डिग्री प्राप्त की।

उसके बाद वे उच्च शिक्षा के लिए इंग्लैंड गए। वहां कैंब्रिज विश्वविद्यालय के ट्रिनिटी कॉलेज में उन्होंने प्रवेश लिया। यहां उन्हें मिखाइल निकल्सन, चार्ल्स फिन्सटिन, लाल जयवर्धने और महबूब अली हक जैसे साथी मिले। उनमें दो गुट बन गए थे, ट्रिनिटी कॉलेज में मॉर्क्सवादी मारिस डाब, उदारवादी डेनिस रॉबर्टसन और महान अर्थशास्त्री पियरो साफा अपनी सेवाएं दे रहे थे।

वे तीनों महान व्यक्ति अमर्त्य कुमार के लिए वरदान साबित हुए। उन्हीं की रह पर चलकर अमर्त्य कुमार ने अर्थशास्त्र की बारीकियों का बड़ी गहराई से अध्ययन किया। उन्होंने विश्वभर की अर्थव्यवस्थाओं का अध्ययन किया। उन्होंने शोध के लिए 'डी च्वाइस ऑफ टेक्निक्स' को अपना विषय चुना।

यह विषय समाजवादी अर्थव्यवस्था से संबंधित था। मॉरीस डाब तथा एक अन्य प्रोफेसर जॉन रॉबिन्सन ने अमर्त्य कुमार के विषय के प्रति अपनी खुशी जाहिर की और उन्हें सहयोग देने का वचन भी दिया। अमर्त्य कुमार ने उस विषय पर अथक मेहनत करके सभी प्रोफेसरों को आश्चर्य में डाल दिया।

एक वर्ष के भीतर ही उनका शोध कार्य बहुत आगे निकल गया। अत: वे कॉलेज से लंबी छुट्टी लेकर भारत चले आए। यहां श्री ए.के. दासगुप्ता की देख-रेख में उन्होंने अपने शोध कार्य को आगे बढ़ाया। वे भी गरीबों की आर्थिक आजादी के प्रबल समर्थक थे और अमर्त्य कुमार जैसा मेधावी शोधकर्ता पाकर खुशी से झूम उठे थे।

सन 1956 में अमर्त्य कुमार को जाधवपुर विश्वविद्यालय में अर्थशास्त्र का प्रवक्ता चुना गया। बाद में उनकी असाधारण अर्थशास्त्र की क्षमता को देखकर उन्हें अर्थशास्त्र विभाग का अध्यक्ष पद भी मिल गया। अमर्त्य कुमार निर्धारित समय से पहले ही अपना शोध पूरा करके इंग्लैंड चले गए। अमर्त्य कुमार ने अपने शोध विषय की पृष्ठभूमि को मजबूत बनाने के लिए दर्शक शास्त्र और तर्कशास्त्र का अध्ययन किया। दर्शन शास्त्र के प्रति भी उनकी गहरी रूचि थी।

सन 1963 में अमर्त्य कुमार का दिल्ली आना हुआ। यहां उन्हें दिल्ली स्कुल ऑफ इकोनॉमिक्स और दिल्ली विश्वविद्यालय में अपनी सेवाएं देने का मौका मिला। दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स के छात्रों की रूचि 'सामाजिक अभिरुचि' विषय के प्रति अधिक थी। यही विषय अमर्त्य कुमार का भी एक प्रमुख विषय था। इसका संबंध गरीबी, बेरोजगारी, असमानता और आर्थिक संकट से था।

उसके साथ ही वे एक पूस्तक की तैयारी में जुटे हुए थे। उस पूस्तक का नाम 'कलेक्टिव च्वाइस एण्ड सोशल वेलफेयर' है। इसका प्रकाशन सन 1970 में हुआ था। इस पूस्तक में 'सामाजिक अभिरुचि' के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है। अमर्त्य कुमार को जब भारत में जाधवपुर विश्वविद्यालय के अर्थशास्त्र विभाग का हेड बनाया गया था, उसी दौरान उन्होंने नवनीता देव के साथ विवाह रचाया था। दोनों में वैचारिक मतभेद उत्पन्न हो गए। अमर्त्य कुमार कभी भारत में रहते तो कभी इंग्लैंड जाते थे।

भारत से इंग्लैंड जाने के बाद वे हार्वर्ड विश्वविद्यालय में अध्यापन कार्य करने लगे। पार्ट टाइम में उनका लेखन कार्य भी चलता रहा। इंग्लैंड में रहकर वे अपनी पत्नी की भावनाओं की कद्र नहीं कर सके। अंत में दोनों में इतनी

कटुता हो गई कि उनके बिच तलाक हो गया। नवनीत के दो बच्चे हैं – 'बेटी का नाम अंतरा (Amartya Sen daughter) है और बेटे का नंदन'।

सन 1971 में वे एक अंग्रेज लड़की ईवा कोर्लोनी के संपर्क में आए, अमर्त्य कुमार से उनके विचार मिलते – जुलते थे। ईवा के विचारों और सामाजिक भावनाओं से प्रभावित होकर अमर्त्य कुमार ने उनके साथ विवाह कर लिया। गरीबों की आर्थिक आजादी के लिए विभिन्न अर्थव्यवस्थाओं की खोज करना ही अमर्त्य कुमार का मिशन था। लेकिन ईवा आजीवन उनका साथ न निभा सकीं। ईवा ने एक पुत्री इंदिरानी और एक पुत्र कबीर को जन्म दिया। उसके बाद उनका कैंसर की बीमारी से सन 1985 में निधन हुआ।

बाद अमर्त्य कुमार अपने बच्चों को लेकर अमेरिका गए। वे 'यूनिवर्सिटी ऑफ टैक्सास, हार्वर्ड, स्टेनफोर्ड और प्रिंसटन' जैसे कई विश्वविद्यालयों को अपनी सेवाएं देने लगे। अमर्त्य कुमार अपने बच्चें पर विशेष ध्यान रखते थे। अमर्त्य कुमार अमेरिका में रहकर भी इंग्लैंड के कई विश्वविद्यालयों और संस्थानों से जुड़े रहे। जब उन्हें कोई मानवतावादी अर्थशास्त्री कहता है तो उन्हें बहुत खुशी होती है।

अमर्त्य कुमार ने अर्थशास्त्र पर लगभग 215 शोध लेख तैयार किए। उन्होंने अर्थशास्त्र के अपने शोध पर 24 पुस्तकें भी तैयार कीं। वे पुस्तकें विश्वभर में बहुत लोकप्रिय हुईं। समाजवाद के क्षेत्र में उठाए गए उनके ठोस क़दमों का विश्व के अर्थशात्रियों ने जोरदार स्वागत किया था।

अमर्त्य कुमार देश-विदेश के समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में अपने लेख भी लिखते रहे। सन 1982 में '**च्वाइस वेलफेयर मेजरमेंट एन्ड रिसोर्सेज**' नामक उनकी एक पुस्तक प्रकाशित हुई। उन्होंने भारत में रह रहे स्त्री-पुरुषों की कार्य क्षमता और लिंग के आधार पर आर्थिक व् औदयोगिक क्षेत्रों में किए जाने वाले भेद-भाव पर कई आंकड़ों का अध्ययन भी किया था। गरीबी और अकाल पर किया गया अमर्त्य कुमार का आर्थिक विश्लेषण अंतराष्ट्रीय स्तर पर खूब सहारा गया। सन 1998 में उनका नाम नोबेल पुरस्कार के लिए चुना गया।

अमर्त्य कुमार को जब इसकी सूचना मिली तो उन्होंने अपनी मां के पास फोन किया, उनकी मां को यकीन ही नहीं हुआ कि उनके बेटे को नोबेल पुरस्कार मिलने जा रहा है, देश-विदेश के समाचार पत्रों में नोबेल पुरस्कार के लिए जब उनके नाम की विधिवत घोषणा की गई, तब उनकी मां को यकीन हुआ।

अमर्त्य कुमार ने '**नोबेल पुरस्कार**' में मिली धनराशि से एक ट्रस्ट बनाया और उस धनराशि का उपयोग भारत के गरीब विद्यार्थियों को विदेश में शिक्षा प्राप्त करने के लिए करने पर बल दिया। नोबेल पुरस्कार में मिली पांच करोड़ की धनराशि को अमर्त्य कुमार ने अपने व्यक्तिगत उपयोग में बिलकुल नहीं लगाया। इसके लिए देश-विदेश में उनके नेक विचारों की खूब सराहना की गई।

अमर्त्य कुमार को कल्याणकारी अर्थव्यवस्था का जनक कहा जाता है और Best Economist India। उन्होंने लोक कल्याणकारी अर्थव्यवस्था का खाका विश्व के समक्ष प्रस्तुत कर दिया है। अमर्त्य कुमार पहले ऐसे अर्थशास्त्री हैं, जिनका ध्यान गरीबों को गरीबी से मुक्त करके पर गया है। उनका मानना है की भारत में गरीबी का मुख्य कारण शिक्षा का अभाव और साधनहीनता है।

उन्हें अपने भाग्य को कोसने के बजाय कर्म करने पर विशेष ध्यान देना चाहिए। अमर्त्य कुमार का मानना है की विश्व में गरीबी का मूल कारण शिक्षा का पिछड़ापन है। धन किस प्रकार कमाया जाए, इसका ज्ञान भी हमें शिक्षा से ही होता है। शिक्षा से अज्ञान रूपी अंधकार को मिटाया जाता है। शिक्षित व्यक्ति अंधविश्वास के चक्कर में पड़कर धर्म के नाम पर कभी गुमराह नहीं होता।

शुद्ध आचरण और शुद्ध व्यवहार करने वाला व्यक्ति खुद को अज्ञानता के खतरे से बचाता है और अपने आर्थिक स्तर को ऊंचा उठाने के लिए तरह-तरह के रास्ते तलाशता है। इस आधार पर सरकार को शिक्षा अनिवार्य कर देनी चाहिए। ताकि शिक्षित समाज बने और देश का विकास हो। लोग उनसे आज भी अर्थशास्त्र पर नए-नए शोध की उम्मीद करते हैं। आशा है की वे अपने चाहने वालों की उम्मीदों पर खरा उतरेंगे।

Communication Address (पत्राचार पता):

Dr. Shaiphali Jain
Assistant Professor (Economics),
Shri Prem Prakash Memorial College of Education
(Teerthanker Mahaveer University), Moradabad, Uttar Pradesh, India.

Email: shaiphali1980jain@gmail.com

Reference

संदर्भ ग्रन्थ सूचि:

1. Foucault, Michael (1980): Power/Knowledge, Edited by Colin Gordon, Pantheon, New York.
2. Habermas, J (1988): 'Law and Modernity', in S.M. Mc Currin (ed.) Tanner Lectures on Human Values, Vol. 8, University of Utah Press.
3. Humana, C (1986): The World Guide to Human Rights, Facts and Files, New York.
4. Kynch, J. and A.K. Sen (1983): "Indian Women: Well Being and Survival", Cambridge Journal of Economics, Vol. 7, 363-380.
5. Nussbaum, M. and A.K. Sen (eds) (1993): The Quality of Life, Clarendon Press, Oxford.
6. Raj K.N. and A.K. Sen (1959): "Sectoral Models for Development Planning", Arthniti, Calcutta, 2(2), May, 173-182.
7. Sen A.K. & P.K. Pattanaik (1969): "Necessary and Sufficient Conditions for Rational Choice Under Majority Decision", Economic Theory, Vol.I, August.
8. Sen, A.K. and Williams (1982): Utilitarianism and Beyond.
9. Sen A.K. & S. Sengupta (1983): "Malnutrition of Rural Children and the Sex Bias", Economic and Political Weekly, 18(19-21), 855-864.
10. UNDP, Human Development Report, Various Years.

11/18/2020